"महाविद्या"
श्री बगलामुखी साधना
और सिद्धि
योगेश्वरानन्द
DYNAMIC
Read Dynamic !
To Be Dynamic !!
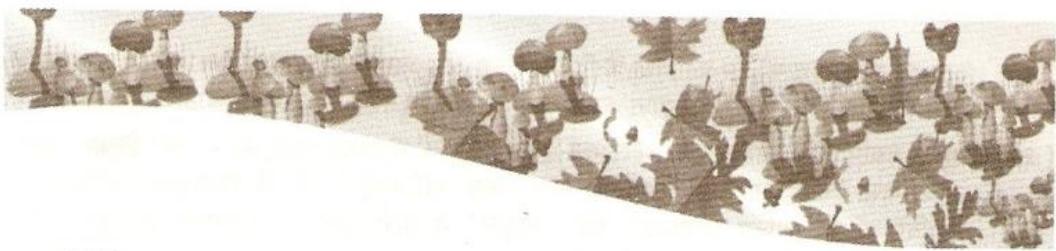
बगलामुखी के विषय में

भगवती बगला सुधा-समुद्र के मध्य में स्थित मणिमय मण्डप में रत्नवेदी पर रत्नमय सिहांसन पर विराजती हैं। पीतवर्णा होने के कारण ये पीत रंग के ही वस्त्र, आभूषण व माला धारण किये हुए हैं। इनके एक हाथ में शत्रु की जिह्वा और दूसरे हाथ में मुद्गर है। व्यष्टि रूप में शत्रुओं का नाश करने वाली और समष्टि रूप में परम् ईश्वर की संहार-इच्छा की अधिष्ठात्री शक्ति बगला हैं।

श्री प्रजापति ने बगला उपासना वैदिक रीति से की और वे सृष्टि की संरचना करने में सफल हुए। श्री प्रजापति ने इस विद्या का उपदेश सनकादिक मुनियों को दिया। सनत्कुमार ने इसका उपदेश श्री नारद को और श्रीनारद ने सांख्यायन परमहंस को दिया, जिन्होंने छत्तीस पटलों में "बगला-तन्त्र" ग्रन्थ की रचना की। "स्वतन्त्र-तन्त्र" के अनुसार भगवान विष्णु इस विद्या के उपासक हुए। फिर श्री परशुराम जी और आचार्य द्रोण इस विद्या के उपासक हुए। आचार्य द्रोण ने यह विद्या परशुराम जी से ग्रहण की थी।

श्री बगला महाविद्या उर्ध्वाम्नाय के अनुसार ही उपास्य है, जिसमें स्त्री (शक्ति) भोग्या नहीं, बल्कि पूज्या है। बगला महाविद्या "श्री कुल" से सम्बन्धित है और अवगत हो कि श्रीकुल की सभी महाविद्याओं की उपासना अत्यन्त सावधानीपूर्वक गुरु के मार्गदर्शन में शुचिता बनाते हुए, इन्द्रियनिग्रहपूर्वक करनी चाहिए। फिर बगला शक्ति तो अत्यन्त तेजपूर्ण शक्ति है, जिनका उद्भव ही स्तम्भन हेतु हुआ था। इस विद्या के प्रभाव से ही महर्षि च्यवन ने इन्द्र के वज्र को स्तम्भित कर दिया था। श्रीमद् गोविन्दपाद की समाधि में विघ्न डालने से रोकने के लिए आचार्य श्री शंकर ने रेवा नदी का स्तम्भन इसी महाविद्या के प्रभाव से किया था। महामुनि श्री निम्बार्क ने किसी ब्राह्मण को इसी विद्या के प्रभाव से नीम के वृक्ष पर, सूर्यदेव का दर्शन कराया था।

श्री बगलामुखी को "ब्रह्मास्त्र विद्या" के नाम से भी जाना जाता है। शत्रुओं का दमन और विघ्नों का शमन करने में विश्व में इनके समकक्ष कोई अन्य देवता नहीं है।

भगवती बगलामुखी को स्तम्भन की देवी कहा गया है। स्तम्भनकारिणी शक्ति नाम रूप से व्यक्त एवं अव्यक्त सभी पदार्थों की स्थिति का आधार पृथ्वी के रूप में शक्ति ही है, और बगलामुखी उसी स्तम्भन शक्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं। इसी स्तम्भन शक्ति से ही सूर्यमण्डल स्थित है, सभी लोक इसी शक्ति के प्रभाव से ही स्तम्भित है। अतः साधकगण को चाहिए कि ऐसी महाविद्या की साधना सही रीति व विधि-विधानपूर्वक ही करें।

अब हम साधकगण को इस महाविद्या के विषय में कुछ और आवश्यक जानकारी देना आवश्यक समझते हैं, जो साधक इस साधना को पूर्ण कर, सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें इन तथ्यों की जानकारी होना अति आवश्यक है।

(१) **कुल**–यद्यपि 'दशों महाविद्याओं' और अन्य 'सिद्ध विद्याओं' में साधना करते समय "कुल विचार" अथवा अन्य किसी 'चक्र' आदि को देखने की आवश्यकता नहीं होती है, तो भी बगलामुखी महाविद्या दशों महाविद्याओं में "अष्टम महाविद्या" तथा "श्रीकुल" में गिनी जाती हैं। अग्रदर्शित तालिका से दशों महाविद्याओं के कुल का ज्ञान स्पष्ट हो जाता है–
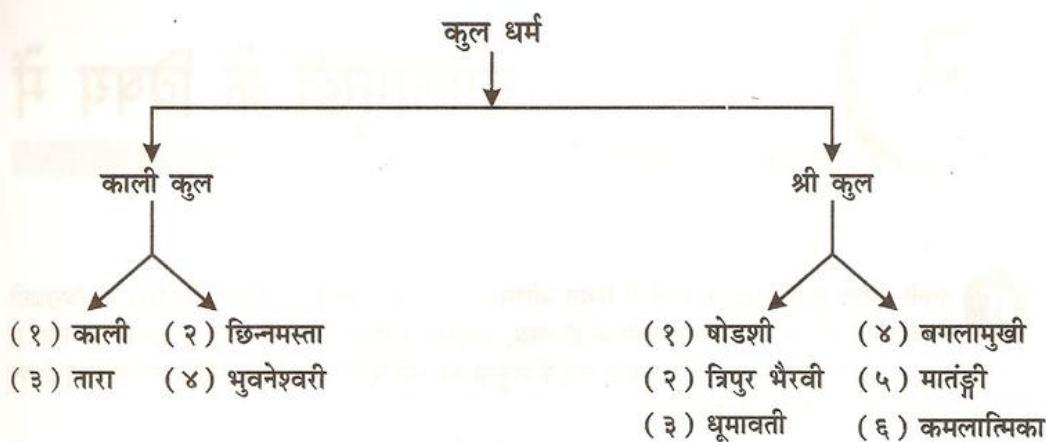
(२) **नाम**–बगलामुखी, पीताम्बरा, बगला, वल्गामुखी, वगलामुखी और ब्रह्मास्त्र विद्या।

(३) **कुल्लुका**–मन्त्र जाप से पूर्व उस मन्त्र की कुल्लुका का न्यास शिर में किया जाता है। इस विद्या की कुल्लुका **'ॐ हूं क्ष्रौं'** हैं, जिसे दस बार जप करके शिर में न्यासित किया जाता है।

(४) **महासेतु**–साधनाकाल में जप से पूर्व 'महासेतु' का जप किया जाता है। ऐसा करने से लाभ यह होता है कि साधक प्रत्येक समय, प्रत्येक स्थिति में जप कर सकता है। इस महाविद्या का महासेतु **'स्त्रीं'** है। इसका जाप कंठ स्थित विशुद्धिचक्र में दस बार किया जाता हैं।

(५) **कवचसेतु**–इसे मन्त्रसेतु भी कहा जाता हैं। जप प्रारम्भ करने से पूर्व इसका जप एक हजार बार किया जाता हैं। ब्राह्मण व क्षत्रियों के लिए **'प्रणव', वैश्यों के लिए 'फट्'** तथा शूद्रों के लिए **'ह्रीं'** कवचसेतु है।

(६) **निर्वाण**–**"ह्रूं ह्रीं श्रीं"** से सम्पुटित मूल मन्त्र का जाप ही इसकी निर्वाण विद्या है। इसकी दूसरी विधि यह है कि पहले प्रणव कर, अ, आ, आदि स्वर तथा क, ख, आदि व्यंजन पढ़कर मूल मन्त्र पढ़ें और अन्त में "ऐं" लगाएं और फिर विलोम गति से पुनरावृत्ति करें।

(७) **बन्धन**–किसी विपरीत या आसुरी बाधा का प्रवेश रोकने के लिए इस मन्त्र का एक हजार बार जप किया जाता है। मन्त्र इस प्रकार हैं- **"ऐं ह्रीं ह्रीं ऐं"।**

(८) **मुद्रा**–इस विद्या में **'योनि'** मुद्रा का प्रदर्शन किया जाता है।

(९) **प्राणायाम**–साधना से पूर्व दो मूल मन्त्रों से रेचक, चार मूल मंत्रों से पूरक, दो मूल मन्त्रों का कुम्भक करना चाहिए। वैसे एक सिद्ध योगी द्वारा दो मूल मंत्रों से पूरक, आठ मन्त्रों से कुम्भक तथा चार मूल मन्त्रों से रेचक हेतु मुझे निर्देश दिया गया था, जिसका उत्तम परिणाम रहा है।

(१०) **दीपन**–दीपक जलाने से जैसे रोशनी हो जाती हैं, उसी प्रकार दीपन से मन्त्र प्रकाशवान हो जाता है। दीपन करने हेतु मूल मन्त्र को योनि बीज **'ईं'** से सम्पुटित कर सात बार जप करें।

(११) **जीवन अथवा प्राण योग**–बिना प्राण अथवा जीवन के मन्त्र निष्क्रिय होता है। अत: मूल मन्त्र के आदि और अन्त में माया बीज **"ह्रीं"** से सम्पुट लगाकर सात बार जप करें।

(१२) **मुख शोधन**–हमारी जिह्वा अशुद्ध रहती है, जिस कारण उससे जप करने पर लाभ के स्थान पर हानि ही होती है। अत: **"ऐं ह्रीं ऐं"** मन्त्र से दस बार जाप कर मुखशोधन करें।

(१३) **मध्य दृष्टि**–साधना के लिए मध्य दृष्टि आवश्यक हैं। अत: मूल मन्त्र के प्रत्येक अक्षर के आगे पीछे **"यं"** बीज का अवगुण्ठन कर मूल मन्त्र का पाँच बार जप करना चाहिए।

(१४) **शापोद्धार**–मूल मन्त्र के जपने से पूर्व दस बार इस मन्त्र का जप करें–

"ॐ ह्रीं बगले ! रुद्र शापं विमोचय-२ ॐ ह्रीं स्वाहा।"

(१५) **उत्कीलन**–मूल मन्त्र के आरम्भ में **"ॐ ह्रीं स्वाहा"** मन्त्र का दस बार जप करें।

(१६) **आचार**–इस विद्या के दोनों आचार हैं, वाम भी और दक्षिण भी।

(१७) **साधना में सिद्धि प्राप्त न होने पर उपाय**–कभी-कभी ऐसा देखने में आता हैं कि बार-2 साधना करने पर भी सफलता हाथ नहीं आती है। इसके लिए आप निम्नवर्णित उपाय करें–

१. कर्पूर, रोली, खस और चन्दन की स्याही से, अनार की कलम से भोजपत्र पर वायु बीज **"यं"** से मूल मन्त्र को अवगुण्ठित कर, उसका षोडशोपचार पूजन करें। निश्चय ही सफलता मिलेगी।

२. सरस्वती बीज **'ऐं'** से मूल मन्त्र को सम्पुटित कर एक हजार जप करें।

३. भोजपत्र पर गौदुग्ध से मूल मन्त्र लिखकर उसे दाहिनी भुजा पर बाँध लें। साथ ही मूल मन्त्र को **"स्त्रीं"** से सम्पुटित कर उसका एक हजार जप करें।

(१८) **ध्यान**–शान्ति, पुष्टि, आकर्षण व वशीकरण कार्यों में अत्यन्त सुन्दर स्वरूपा षोडशा का ध्यान व चिन्तन करना चाहिए, जबकि मारण व उच्चाटन में शवारुढ़ा देवता का ध्यान करें।

(१९) **पंचामृत**–

(१) दही, (२) दूध, (३) घी, (४) शहद, (५) शक्कर।

(२०) **अष्टगन्ध**–

(१) चन्दन, (२) अगर, (३) कपूर, (४) कुंकुम, (५) कचूर, (6) गोरोचन, (७) जटामांसी, (८) लाल चन्दन।

(२१) **प्रदक्षिणा**–

यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे-पदे॥

इस मन्त्र का जप करते हुए एक परिक्रमा करनी चाहिए।

(२२) **दोष परिहार**–मन्त्र जप के समय यदि छींक, आलस्य, जम्हाई या अधोवायु हो तो सूर्य दर्शन अथवा प्राणायाम से उसका दोष परिहार हो जाता है।

(२३) **विशेष**–गन्ध, पुष्प, आभूषण-भगवती के सामने रखें। दीपक देवता के दायीं ओर व धूपबत्ती बायीं ओर

४ श्री बगलामुखी पूजन पद्धति

भगवती पीताम्बरा के 36 अक्षरी मन्त्र या विद्या को मन्त्रराज की संज्ञा से विभूषित किया गया है, जो इस प्रकार है-

"ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय
जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।"

सर्वप्रथम गुरुदेव का ध्यान करें-

(अक्षत व पुष्प हाथ में लें)

"अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥
देवताया दर्शनम् च करुणा वरुणालयं।
सर्व सिद्धि प्रदातारं श्री गुरुं प्रणमाम्यहम्॥
वराभय कर नित्यं श्वेत पदम् निवासिनं।
महाभय निहन्तारं गुरुदेव नमाम्यहम्"॥

तद्रोपरान्त अक्षत व पुष्प गुरुचरणों में अर्पित कर कार्य सिद्धि हेतु पूजन संकल्प लें (हाथ में अक्षत, पुष्प, द्रव्य व जल लेकर)

◆ संकल्प ◆

ॐ तत्सद्य परमात्मन् आज्ञया प्रवर्तमानस्य अमुक सवंत्सरस्य श्री श्वेतवाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे अमुक प्रदेशे, अमुक स्थाने, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे, अमुक वासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नः, अमुक नामे, ऽहं श्री

भगवत्याः पीताम्बरायाः प्रसाद सिद्धि द्वारा मम सर्वाभिष्ट सिद्धयर्थं (न्यायालये अस्मत पक्ष विजयार्थं, नाना ग्रहोपग्रह प्रयोगं, नाना दुष्टरोग शान्त्यर्थे, शीघ्रं आरोग्य लाभार्थे, सर्व दुष्ट बाधा कष्ट ग्रह उच्चाटनार्थे आदि) यथा शक्ति, यथाज्ञानेन, यथा–सम्भावितोपचारद्रव्यै यथालब्धोपचारेण पूजनमहं करिष्ये।"

(अमुक नाम के स्थान पर व्यक्ति अपना नाम ले।)

अब आप हाथ में लिये हुए पुष्प, अक्षत आदि भूमि पर छोड़े। फिर हाथ में पीतपुष्प लेकर बगलामुखी का ध्यान करें–

◆ **ध्यान** ◆

सौवर्णासन-सस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभाङ्गरुचिं शशांङ्क मुकुटां सच्चम्पक-स्रगयुताम्,
हस्तैर्मुद्‌गर-पाशबद्ध-रसनां संबिभ्रतिं भूषणै-
र्व्याप्ताङ्गी बगलामुखी त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये॥

हाथ में लिये गये पुष्प माता को अर्पण करें–

◆ **आह्वान** ◆

पीत पुष्पों से माँ का आह्वान करते हुए उनका स्वागत करें–

आगच्छ त्वं महादेवि! स्थाने चात्र स्थिरा भव।
यावत् पूजां करिष्यामि, तावत् त्वं सन्निधो भव॥
श्री पीताम्बराय नमः। बगलामुखिदेवीमावाह्यामि।
आवाहनार्थे पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

पुष्पांजलि समर्पित करें।

◆ **आसन** ◆

अनेक रत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
इदं हेममयं दिव्यमासनम् प्रतिग्रह्यताम्॥
ह्रीं बगलायै नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

◆ **पाद्य** ◆

केसर, गोरोचन व पीतपुष्प जल में मिलाकर चढ़ायें-

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्।
पाद्यार्थं ते प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वरि॥
ह्रीं बगलायै नमः। पादयो पाद्यं समर्पयामि।

◆ **अर्घ्य** ◆

जल, जिसमें चन्दन, पीत पुष्प, अक्षत, पीली सरसों व तिल पड़े हों, भगवती को प्रदान करें–

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण त्वं महादेवि! प्रसन्ना भव सर्वदा।।

ह्लीं बगलायै नमः। अर्घ्यं समर्पयामि।

◆ आचमन ◆

कर्पूर से सुवासित जल जिसमें जायफल, लौंग तथा कंकोल का चूर्ण मिला हो, भगवती को मन्त्र पढ़ने के उपरान्त आचमन हेतु प्रदान करें–

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वरि।।

ह्लीं बगलायै नमः। आचमनं समर्पयामि।

◆ स्नान ◆

गंगाजल में केसर व गोरोचन मिलायें व मन्त्र पढ़कर भगवती को प्रदान करें।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपाप हरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देवि! स्नानार्थं प्रतिग्रह्यताम्।।

ह्लीं बगलायै नमः। स्नानार्थं जलं समर्पयामि।

पुनः आचमन करायें–

स्नानान्ते पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

◆ दुग्ध स्नान ◆

गाय के दूध में केसर मिलाकर मन्त्र पढ़ने के उपरान्त भगवती को दूध से स्नान करायें।

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

ह्लीं बगलायै नमः। दुग्धस्नानं समर्पयामि।

◆ दधिस्नान ◆

गाय के दूध से बनी दही से मन्त्र पढ़ने के उपरान्त भगवती को स्नान करायें।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशीप्रभम्।
दध्यानीतं महादेवि! स्नानार्थं प्रतिगह्यताम्।।

ह्लीं बगलायै नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

◆ घृत स्नान ◆

गाय के दूध से बने घी से मन्त्र पढ़ने के उपरान्त भगवती को स्नान करायें।

नवनीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोषकारकम्।

घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ह्रीं बगलायै नमः। घृत स्नानं समर्पयामि।

◆ मधु स्नान ◆

शुद्ध शहद से माता को स्नान करायें।

पुष्परेणु समुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु।

तेजः पुष्टि समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ह्रीं पीताम्बरायै नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

◆ शर्करा स्नान ◆

शक्कर से भगवती को स्नान करायें।

इक्षुसार समुद्भूतं शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।

मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

ह्रीं पीताम्बरायै नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि।

◆ पञ्चामृत स्नान ◆

अन्य पात्र में पृथक रूप से निर्मित पञ्चामृत से स्नान करायें।

पयो, दधि, घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ह्रीं पीताम्बरायै नमः। पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

◆ गन्धोदक स्नान ◆

भगवती को पीले चन्दन व अष्ट गन्ध से स्नान करायें।

मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरुमिश्रितम्।

सलिलं देव देवेशि! शुद्ध स्नानाय गृह्यताम्।।

ह्रीं बगलायै नमः। गन्धोदक स्नानं समर्पयामि।

◆ शुद्धोदक स्नान ◆

माता रानी को शुद्ध जल से स्नान करायें।

शुद्ध यत् सलिलं दिव्यं गंगाजल समं स्मृतम्।

समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ह्रीं बगलायै नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नान के उपरान्त पुनः आचमन करायें–

शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

◆ वस्त्र ◆

भगवती को वस्त्र व अन्तर्वस्त्र प्रदान करें।

पट्टयुग्मं मया दत्तं कञ्चुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपां कृत्वा मातः श्री बगलामुखी।।

ह्रीं बगलायै नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

◆ चन्दन ◆

चन्दन चढ़ायें।

श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठे चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ह्रीं बगलायै नमः। गन्धं समर्पयामि।

◆ सौभाग्य सूत्र ◆

सौभाग्य-सूत्र चढ़ायें।

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुतम्।
कण्ठे बन्धनामि देवेशि! सौभाग्यं देहि मे सदा।।

ह्रीं बगलायै नमः। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि।

◆ हरिद्रा ◆

हल्दी का चूर्ण अर्पित करें।

हरिद्रा रन्जिते देवि! सुख सौभाग्य दायिनी।
तस्मात् त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्ति प्रयच्छ मे।।

ह्रीं बगलायै नमः। हरिद्रां समर्पयामि।

◆ कुंकुम ◆

रोली का अर्पण करें।

कुंकुंम कामदंदिव्यं कामिनी काम सम्भवम्।
कुंकमेनार्चिता देवि। कुंकुंम प्रतिगृह्यताम्।।

ह्रीं बगलायै नमः। कुंकुमं समर्पयामि।

◆ सिन्दूर ◆

भगवती को सिन्दूर चढ़ायें।

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसंनिभम्।
अर्पितं ते मया भक्त्या प्रसीद परमेश्वरि।।

ह्रीं बगलायै नमः। सिन्दूरं समर्पयामि।

◆ कज्जल ◆

भगवती को काजल अर्पित करें।

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे! शान्तिकारके।।
कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण बगलामुखि!।।

ह्रीं बगलायै नमः। कज्जलं समर्पयामि।

◆ बिल्वपत्र ◆

भगवती को बेल के वृक्ष के पत्ते अर्पित करें।

त्रिदलं, त्रिगुणाकारं, त्रिनेत्र च त्रिधायुतम्।
त्रिजन्य पाप संहारम बिल्वपत्रं बगलार्पणम्।।

ह्रीं बगलायै नमः। बिल्वपत्रं समर्पयामि।

◆ पुष्प ◆

मन्दार, चम्पा, कनेर आदि के पुष्प चढ़ायें।

मन्दार-परिजातादि-पाटल, केतकानि च।
जाती-चम्पक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने!।।

ह्रीं बगलायै नमः। पुष्पं समर्पयामि।

◆ धूप ◆

भगवती को धूपबत्ती दिखायें।

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्य गन्ध उत्तमः।
आघ्रेय पीताम्बरे! धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ह्रीं बगलायै नमः। धूपमाघ्रपयामि।

◆ दीप ◆

भगवती को दीपक दिखायें।

साज्यं च वर्ति संयुक्तम बह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ह्रीं बगलायै नमः। दीपं दर्शयामि।

◆ नैवेद्य व फल ◆

इस मंत्र से देवी को नैवेद्य व फल अर्पित करें।

अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षड्भि समन्वितम्।
नैवेद्यं च फलं गृह्यताम् देवि! भक्ति मे ह्यचलां कुरु।।

ह्रीं बगलामुख्यै नमः। नैवेद्यं च फलं निवेदयामि।

◆ ताम्बूल ◆

भगवती को पान का बीड़ा अर्पित करें

एला-लवङ्ग-कस्तूरी-कर्पूरैः पुष्पवासिताम्।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि भगवती बगलामुखी!॥

ह्रीं बगलायै नमः। मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

◆ चामर ◆

भगवती को चामर चढ़ायें।

ॐ चामरं चमरीपुच्छं, हेमदण्ड समन्वितम्।
मयार्पितम् राजचिन्हं, चामरं प्रतिगृह्यताम्॥

ह्रीं बगलायै नमः। चामरं समर्पयामि।

◆ पुष्पाञ्जलि या पुष्पांजलि ◆

माता रानी को पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण बगलामुखि॥

ह्रीं बगलायै नमः। पुष्पांजलि समर्पयामि।

◆ आरती ◆

कपूर से भगवती की आरती उतारें।

कदलीगर्भ सम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मा वरदा भवः॥

ह्रीं बगलामुख्यै नमः। कर्पूरार्तिक्यं समर्पयामि।

◆ प्रदक्षिणा ◆

भगवती की एक प्रदक्षिणा करें।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे॥

◆ मानस पुष्पाञ्जलि ◆

भगवती को मानस पुष्पाञ्जलि अर्पित करें।

यह तन भी अर्पित किया तुम्हें,
यह मन भी कहाँ रहा मेरा॥

यह माया आनी जानी हैं।
यह जीवन जोगी का फेरा॥
सब रिश्ते नाते झूठे ये।
सब मोह माया का बन्धन है॥
अब जाऊँ कहाँ? माँ तू ही बता।
मैंने डाल दिया तेरे दर, डेरा॥
मेरा कुछ भी रहा नहीं, अपना।
यही "पुष्प" हार स्वीकार करो, मेरा॥
श्रद्धया सिक्त्या भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं माते। प्रतिगृह्यताम्॥
ह्रीं बगलायै नमः। मन्त्रपुष्पांजलि समर्पयामि।

◆ क्षमा-याचना ◆

न मन्त्रं न यन्त्रं च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं, ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्तवदनुसरणं क्लेशहरणम्।

◆ अर्पण ◆

सम्पूर्ण पूजा के अन्त में भगवती को अर्पण करें।
गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणा स्वमत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! तत्प्रसादात सुरेश्वरि॥
अनया पूजया महामाया बगलामुखी प्रियतां न मम्।
तद्पोरान्त महामाया से प्रार्थना करें—
माँ बगले! मेरे द्वारा की गयी पूजा को स्वीकार करते हुए, मुझ पर प्रसन्न हों।

卐 卐 卐

आवरण पूजा, बगलामुखी यन्त्र

माता महामाया के पूजन के उपरान्त उनके परिवार का पूजन भी एक आवश्यक पूजनांङ्ग है। इसके अभाव में साधक का प्रयास अपूर्ण ही रहेगा। परिवार पूजा के लिये साधक को बगलामुखी यन्त्र का निर्माण करना होगा।

सर्वप्रथम पूजा स्थान पर गाय के गोबर से लीप लें। फिर उस स्थान पर रेत की मोटी पर्त बिछा लें और उस पर हरिद्राचूर्ण से यन्त्रराज का निर्माण करें। यन्त्र का स्वरूप निम्नवत् है–
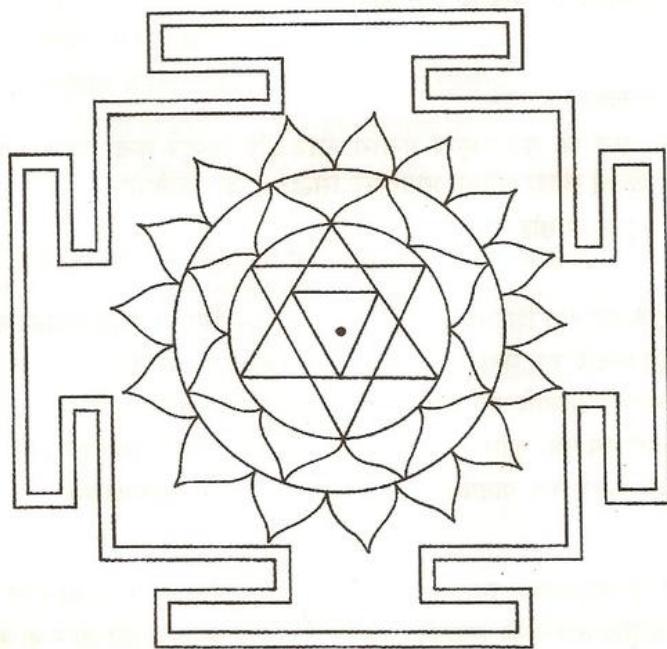
यन्त्र पूजा से पूर्व पूजन सामग्री साधक अपने पास पहले से ही रख लें। इस सामग्री में पुष्प, अक्षत, अर्घ्य पात्र व जल का लोटा होना आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक मन्त्र के अन्त में पुष्प व जल से पूजन व तर्पण किया जाता है।

यंत्र स्थापना के उपरान्त माँ पीताम्बरा से मानसिक रूप से परिवारार्चन की अनुमति लें, यथा–

"श्री पीताम्बरे तत्‌ावरण देवता पूजनार्थं अनुज्ञां देहि।"

◆ मूल मंत्र न्यास ◆

सर्वप्रथम मूल मंत्र से न्यास करें। पहले तीन बार मंत्र से प्राणायाम करें, फिर विनियोग कर ऋष्यादिन्यास करें।

◆ मन्त्रोद्धार ◆

प्रणवं स्थिरमायां च ततश्च बगलामुखीम्।
तदन्ते सर्व दुष्टानां ततो वाचं मुखं पदं॥
स्तम्भयेति ततो जिह्वां कीलयेति पद द्वयम्।
बुद्धिं नाशय पश्चात्तु स्थिरमायां समालिखेत्॥
लिखेच्च पुनरुोङ्कार स्वाहेति पदमन्ततः।
षटत्रिंशदक्षरी विद्या सर्वसम्पतकरी मता।

◆ यन्त्रोद्धार ◆

बिन्दुस्त्रिकोण-षट्‌कोण-वृत्ताष्टदलमेव च।
वृतं च षोड़शदलं यन्त्रं च भूपुरात्मकम्॥

◆ विनियोग ◆

सीधे हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ें–

"ॐ अस्य श्री बगलामुखि मन्त्रस्य नारदऋृषि त्रिष्टुप छन्दः बगलामुखी देवता, ह्ल्रीं बीजम् स्वाहा शक्तिः ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।"

(जल पृथ्वी पर छोड़ दें)

◆ ऋष्यादिन्यास ◆

नारद ऋषये नमः शिरसि।	(सिर पर दाहिने हाथ से छुएं)
त्रिष्टुप छन्दसे नमः मुखे।	(मुँह को छुएं)
बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।	(हृदय को छुएं)
ह्ल्रीं बीजाय नमः गुह्ये।	(गुह्यंग में स्पर्श करें)
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।	(पैरो को स्पर्श करें)

◆ करन्यास ◆

ॐ ह्ल्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।	(हाथ को अंगूठे का स्पर्श करें)
बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा।	(प्रथम अंगुली का स्पर्श करें)
सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्।	(मध्यमा का स्पर्श करें)

वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्याम् हुम्। (अनामिका का स्पर्श करें)

जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट। (अंतिम छोटी अंगुली का स्पर्श करें)

बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। (दोनों हथेलियों के आगे व पीछे के भागों का स्पर्श करें)

◆ **हृदयादिन्यास** ◆

ॐ ह्ल्रीं हृदयाय नमः। (हृदय को दाहिने हाथ से स्पर्श करें)

बगलामुखि शिरसे स्वाहा। (सिर का स्पर्श करें)

सर्व दुष्टानां शिखायै वषट्। (शिखा का स्पर्श करें)

वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। (कवच बनायें)

जिह्वां कीलय् नेत्र त्रयाय वौषट्। (नेत्रों का स्पर्श करें)

बुद्धिं विनाशय ॐ ह्ल्रीं स्वाहा, अस्त्राय फट् (सिर के पीछे से दायें हाथ से चुटकी बजाते हुये दाहिने हाथ पर बायें हाथ की तर्जनी व मध्यमा से तीन ताली बजायें)

◆ **ध्यान** ◆

मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डप-रत्नवेद्यां
सिंहासनोपरिगतां, परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गी
देवीं स्मरामि धृत मुद्गर वैरि जिह्वाम्॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देविं वामेन शत्रुन् परिपीड़यन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढयां द्विभुजां नमामि॥

इस प्रकार माता का ध्यान करके उनका मानसोपचार पूजन करें, फिर बाह्य पूजन (आवरण पूजा) आरम्भ करें।

सर्व प्रथम यन्त्र का शुद्ध जल से प्रक्षालन करके चन्दन आदि चढ़ायें और मूल मंत्र से पुष्पाञ्जलि अर्पित करें। अर्घ्य-स्थापना करें। अपने बायीं ओर चतुरस्रवृतत्रिकोणात्मक मण्डल बनाकर उसके मध्य में **"ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ कमठाय नमः। ॐ शेषाय नमः।"** कहते हुये गन्धाक्षत, पुष्पादि से पूजन करें और **"ॐ अग्निमण्डलाये दशकलात्मने बगलार्घ्य पात्रासनाय नमः"** कहकर उस त्रिकोण के ऊपर अर्घ्यपात्र रखकर **"ॐ दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः।"** इससे गन्धाक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें।

चतुरस्रवृतत्रिकोणात्मक मण्डल का प्रारूप–
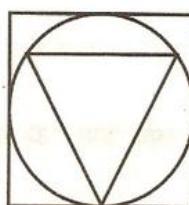
चित्र संख्या - २

"श्री बगलामुखी स्तोत्रम्"

श्री गणेशाय नमः

प्रस्तुत स्तोत्र प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ **"रुद्रयामल तन्त्र"** से उद्धरित है। इस स्तोत्र का पाठ करने से माँ बगला अत्यन्त प्रसन्न होती हैं और प्राणी के शत्रुओं का स्तम्भन, आपदाओं का नाश और सौभाग्य का ऐसा उदय करती हैं कि शत्रु स्तम्भित होकर उस प्राणी को देखते ही रह जाते हैं।

◆ **विनियोग** ◆

ॐ अस्य श्री बगलामुखी स्तोत्रस्य, नारद ऋषिः, श्री बगलामुखी देवता, त्रिष्टुप छन्दः मम सन्निहितानां विरोधिनां दुष्टानां वाङ्गमुख-पद-बुद्धिनां स्तम्भनार्थे श्री महामाया बगलामुखी वर प्रसाद सिद्धयर्थं जपे (पाठे) विनियोगः।

◆ **अङ्गन्यास** ◆

ॐ ह्ल्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।	(अंगूठे का स्पर्श करें)
ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा।	(तर्जनी का स्पर्श करें)
ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्।	(मध्यमा का स्पर्श करें)
ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्।	(अनामिका का स्पर्श करें)
ॐ जिह्वां कीलय् कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	(कनिष्ठिका का स्पर्श करें)

ॐ बुद्धि विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा करतल कर पृष्टाभ्यां फट्।

(हथेली के अगले व पृष्ठ भागों का स्पर्श, यानि मिलायें)

◆ हृदयादि न्यास ◆

ॐ ह्ल्रीं हृदयाय नमः। (हृदय का स्पर्श करें)
ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। (सिर का स्पर्श करें)
ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। (शिखा का स्पर्श करें)
ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। (दोनों हाथों से कवच बनायें)
ॐ जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों का स्पर्श करें)
ॐ बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा, अस्त्राय फट्। (तीन चुटकी व ताली बजायें)

सर्वप्रथम विनियोग करें और हाथ में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें। तद्ोपरान्त मन्त्र का अङ्गन्यास आदि करें।

◆ ध्यान ◆

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पितांशुकोल्लासिनीं,
हेमाभाङ्गरूचिं शशांङ्कमुकुटां स्च्चम्पक स्रगयुताम्।
हस्तैर्मुद्गर-पाश-वज्र-रसनां संबिभ्रतीं भूषणैः,
र्व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनी चिन्तयेत्॥

◆ जप मन्त्र ◆

ॐ ह्ल्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय।
जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा॥

॥ स्तोत्र ॥

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्नवेद्यां,
सिहांसनो परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं,
देवीं भजामि धृत-मुद्गर-वैरिजिह्वाम ॥१॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं,
वामेन शत्रुन् परिपीड़यन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन,
पीताम्बराढयां द्विभुजां नमामि। ॥२॥

भावार्थ- अमृत सागर के मध्य, मणिमण्डप की रत्नवेदी पर एक सिंहासन पर पीतवर्णा देवी विराजमान हैं। उनके वस्त्राभूषण, माला आदि सब कुछ पीत रंग के हैं। बायें हाथ में शत्रु की जिह्वा पकड़कर दाहिने हाथ में मुद्गर लेकर शत्रु पर प्रहार कर रही हैं। ऐसी माँ पीताम्बरा को मैं प्रणाम करता हूँ।

चलत्कनक-कुण्डलोल्लसित-चारू गण्डस्थलां,
लसतकनक-चम्पक-द्युति-मदिन्दु-बिम्बाननाम्।

गदाहत-विपक्षकां कलित-लोल-जिह्वां चलां,

स्मरामि बगलामुखीं विमुख-वाङ-मनः स्तम्भिनीम् ।।३।।

भावार्थ– चंचल स्वर्ण कुण्डलों से सुसज्जित कपोलों वाली, कनक व चम्पा के पुष्प जैसे शरीर की कान्तिपूर्ण चन्द्रमुखी, गदा-प्रहार से शत्रुओं की हन्ता, सुन्दर चंचल जिह्वा वाली, विमुखों की वाणी व मन का स्तम्भन करने वाली माँ बगलामुखी का मैं स्मरण करता हूँ।

पीयूषोदधि-मध्य-चारु-विलसद्-रत्नोज्जवले मण्डपे,

तत्सिंहासन-मूल-पतित-रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्।

स्वर्णाभां कर-पीड़ितारि-रसनां भ्राम्यद गदां विभ्रमां,

यस्तवां ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ।।४।।

भावार्थ– जो साधक अमृत-समुद्र के मध्य में रत्नोज्ज्वलित मण्डप, रत्नजड़ित सिंहासन पर आसीन स्वर्ण आभा वाली एक हाथ से शत्रु जिह्वा और दूसरे में घूमती हुई गदा (मुद्गर) धारण किये हुए, प्रेतासन पर आसीन, रिपुओं के शीश झुकाने वाली, आपका ध्यान करता है, उसकी सभी आपदाओं का तुरन्त विलय हो जाता है, अर्थात् नाश हो जाता है।

देवी! त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते यः पीत पुष्पाञ्जलिं,

मुद्रा वामकरे निधाय च मनन मन्त्रों मनोज्ञाक्षरम्।

पीताध्यानपरोऽथ कुम्भक वशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं,

तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ।।५।।

भावार्थ– हे देवी! जो साधक आपके चरण-कमलों का पीत पुष्पों की अञ्जलि से अर्चन करता है, मुद्रा बनाकर आपके ध्यान में तत्पर होकर कुम्भक मनोहर अक्षर वाले भूमि बीज **'लं'** का स्मरण करता है, उसके अमित्रों अर्थात् शत्रुओं की वाणी और हृदय में तत्क्षण जड़ता आ जाती है, अर्थात् स्तम्भन हो जाता है।

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति,

क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।

गर्वी खर्वति सर्वविच्च जड़ति त्वधन्त्रणा यन्त्रितः,

श्री नित्ये! बगलामुखी! प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ।।६।।

भावार्थ– हे कल्याणि! आपके मन्त्र के द्वारा यन्त्रित किया गया वादी गूंगा, छत्रपति रंक, अग्नि शीतल, क्रोधी शान्त, दुर्जन सुजन, धावक लंगड़ा, गर्वयुक्त छोटा और सर्वज्ञ जड़ हो जाता है। अतएव, हे लक्ष्मी स्वरुपा नित्ये! माँ बगला! कल्याणी! मैं आपको प्रतिदिन नमन् करता हूँ।

मन्त्र स्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते।

यन्त्र वादि नियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते।

मातः! श्री बगलेति नाम ललितं यस्याऽस्ति जन्तोर्मुखे,

त्वन्नाम स्मरेण संसदि मुखस्तम्भों भवेद् वादिनाम ।।७।।

भावार्थ– शत्रुओं के दल के दमन के लिए आपका मन्त्र ही पर्याप्त है और वैसा ही पवित्र स्तोत्र भी। वक्ताओं के नियन्त्रण हेतु आपका त्रिलोक प्रसिद्ध विजयशाली यन्त्र भी विलक्षण है। माँ! **"श्री बगला"**-आपका यह

ललित नाम जिस भी साधक के मुख की शोभा बढ़ाता है, वह धन्य है, क्योंकि आपके नाम के स्मरण मात्र से ही वक्ताओं के मुख स्तम्भित हो जाते हैं।

दुष्ट-स्तम्भन-मुग्र-विघ्न-शमनं दारिद्रय-विद्रावणं,

भूभृत्संनमनं च यन्मृगदृशां चेतः समाकर्षणम्।

सौभाग्यैक-निकेतनं समदृशां कारुण्यपूर्णेक्षणे,

मृत्योमार्रणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥८॥

भावार्थ– दुष्टों का स्तम्भन करने वाला, उग्र विघ्नों का शमन कारक, दरिद्रता का नाश करने वाला, भूपतियों का दमन कारक, मृग जैसी चंचल चितवनों वाली के चित्त का भी आकर्षण करने वाला, सौभाग्य का एक मात्र निवास, करुणा पूर्ण नेत्रों वाला, मृत्यु का भी मारण करने वाला आपका सुन्दर शरीर है। माँ! मुझे दर्शन दो।

मातर्भञ्जय मद-विपक्ष-वदनं जिह्वां च संकीलय,

ब्राह्मीं यन्त्रेय दैत्य-देव-घिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय।

शत्रुंश्चूर्णय देवि! तीक्ष्ण-गदया गौराङ्गि पीताम्बरे!

विघ्नोघं बगले! हर प्रणमतां कारुण्य पूर्णेक्षणे॥९॥

भावार्थ– हे गौराङ्गी! पीताम्बरे! हे देवी! मेरे शत्रुओं की वाणी को बन्द कर दो। उनकी जिह्वा को कील दो। ब्राह्मी मुद्रा धारण कर दैत्य और देवों की उग्र गति को स्तम्भित कर दो। माँ! अपनी तीक्ष्ण गदा से मेरे शत्रुओं को चूर्ण कर दो। अपनी करुणापूर्ण दृष्टि से साधकों के विघ्न समूह को दूर कर दो।

मातर्भैरवि! भद्र-कालि! विजये! वाराहि विश्वाश्रये!,

श्री विद्ये! समये! महेशि! बगले! कामेशि! वामे रमे!,

मातङ्गि! त्रिपुरे! परात्पर-तरे! स्वर्गापवर्ग-प्रदे!,

(दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि! त्राहिमाम्॥१०॥)

भावार्थ– हे माँ! भैरवी! भद्रकाली! विजया! वाराही! भुवनेश्वरि! श्री विद्या! षोडशी! महेशी! बगला! रमा अर्थात् कमला! मातङ्गी! सब आप ही हैं। माँ-स्वर्ग और मोक्ष प्रदायिनी भी आप ही हैं। हे माँ! हे विश्वेश्वरी! करुणा करके मेरी रक्षा करो। मैं आपका दास हूँ और आपकी शरण में हूँ।

त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननि विघ्नोघ विध्वंसिनी,

योषाकर्षण कारिणी त्रिजगतामानन्द-सम्वर्धिनी।

दुष्टोच्चाटन कारिणी पशुमनः सम्मोह- संदायिनी,

जिह्वा कीलन भैरवि विजयते ब्रह्मास्त्र विद्या परा ॥११॥

भावार्थ– आप! परम विद्या हैं, त्रिलोक जननि हैं, विघ्नों का नाश करने वाली हैं, स्त्रियों को आकर्षित करने वाली हैं, तीनों जगतों का आनन्द संवर्धन करने वाली हैं, दुष्टों का उच्चाटन करने वाली हैं, पशुमन को सम्मोहन देने वाली हैं, दुष्टों की जिह्वा कीलन में भैरवी हैं और विजय प्रदान करने में परा ब्रह्मास्त्र विद्या हैं।

पीतवस्त्र वसनाभरि-देह-प्रेत-जासन निवेशित देहाम्,

फुल्लपुष्प-रविलोचन-रम्यां दैत्यजाल दहनोज्जवल-भूषाम्।

पर्यंकोपरि-लसदद्विभुजां कम्बु-हेमनत-कुण्डल-लोलाम्।

वैरिनिर्दल-कारण-रोषां चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे ॥१२॥

भावार्थ– पीतवस्त्रा, शत्रु के शव पर आसन लगाये, पुष्प की तरह कोमलांगी, सूर्य की तरह नेत्रों वाली, दैत्यों के लिए उज्जवल वस्त्र धारण किये, पलंग पर शोभायमान, दो हाथों वाली, वलयाकार स्वर्ण कुण्डल से शोभित, बैरियों के दलन हेतु अत्यन्त रोषयुक्त माँ बगला का मैं हृदय कमल में ध्यान करता हूँ।

यत् कृतं जप संध्यानं चिन्तनं परमेश्वरि।

शत्रुणां स्तम्भनार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तुते ॥१३॥

भावार्थ– हे पराम्बा! हे परमेश्वरी! माँ बगले! दुष्टों के स्तम्भनार्थ, आपके विषय में मैंने जपादि पूर्वक जो कहा है, उसे आप स्वीकार करें। माँ पीताम्बरा! आपको मेरा बारम्बार नमस्कार है।

卐 卐 卐

श्री बगलापञ्जर स्तोत्रम्

यह अति गोपनीय व रहस्यपूर्ण पञ्जर अति दुर्लभ तथा परीक्षित है। इस पञ्जर का जप अथवा पाठ करने वाला साधक प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का सोपान करता है। घोर दारिद्रय व विघ्नों के नाशक इस स्तोत्र का पाठ करने वाले साधक की माँ बगला स्वयं रक्षा करती हैं। अरिदल साधक को मूक होकर देखते रह जाते हैं।

◆ विनियोग ◆

ॐ अस्य श्रीमद्-बगलामुखी-पीताम्बरा-पञ्जर रूप स्तोत्र मन्त्रस्य भगवान नारद ऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमो मुखे, जगद्-वश्यकरी श्री पीताम्बरा बगलामुखी देवतायै नमो हृदये, ह्ल्रीं बीजाय नमो दक्षिण स्तने, स्वाहा शक्तये नमो वाम स्तने, क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, मम् परसैन्य मन्त्र तन्त्र आदि कृत विपक्ष क्ष्यार्थं श्रीमत्पीताम्बरा बगलादेव्या प्रीतये, स्वाभीष्ट सिद्धये च जपे विनियोगः।

कर न्यास	अङ्गन्यास
ह्ल्रां अगुष्ठाभ्यां नमः।	ह्ल्रां हृदयाय नमः।
ह्ल्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।	ह्ल्रीं शिरसे स्वाहा।
ह्ल्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।	ह्ल्रूं शिखायै वषट्।
ह्ल्रैं अनामिकाभ्यां हुँ।	ह्ल्रैं कवचाय् हुं।
ह्ल्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	ह्ल्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ह्ल्रः करतलकरपृष्टाभ्यां फट्।	ह्ल्रः अस्त्राय् फट्।

◆ व्यापक न्यास ◆

ॐ ह्ल्रीं अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुं। ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा करतल कर पृष्टाभ्यां फट्।

इसी प्रकार मूल मन्त्र से अङ्गन्यास करें–

ॐ ह्ल्रीं हृदयाय नमः।
ॐ बगलामुखि शिरसे स्वाहा।
ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्।
ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्।
ॐ जिह्वां कीलय् नेत्र त्रयाय वौषट्।
ॐ बुद्धिं विनाशय ह्ल्रीं ॐ स्वाहा, अस्त्राय फट्।

◆ ध्यान ◆

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्नवेधां,
सिंहासनों परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गी,
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वां।

इसके उपरान्त मानस पूजा करें–

श्री पीताम्बरायै नमः लं पृथिव्यात्मकं गंधं परिकल्पयामि।
श्री पीताम्बरायै नमः हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।
श्री पीताम्बरायै नमः यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।
श्री पीताम्बरायै नमः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि।

इसके उपरान्त महामाया को योनिमुद्रा से प्रणाम करके स्तोत्र का पाठ शुरू करें–

।। पञ्जर स्तोत्र ।।

पञ्जरं तत् प्रवक्ष्यामि देव्याः पाप प्रणाशनम्।
यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरपि नरा क्वचित् ।।१।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमत्पीताम्बरादेवी बगला बुद्धिवर्द्धिनी।
पातु माम निशं साक्षात् सहस्रार्कसमद्युति ।।२।।
शिखादिपादपर्यन्तं वज्रपञ्जर धारिणी।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमद् ब्रह्मास्त्रविद्याया पीताम्बरा विभूषिता ।।३।।
बगला मामवत्वत्र मूर्ध भागं महेश्वरि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामाङ्कुशकला पातु बगलाशास्त्र बोधिनी ।।४।।
पीताम्बरा सहस्राक्षा ललाटं कामितार्थदा।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरा सुधारिणी ।।५।।
कर्णयोश्चैव युगपद अतिरत्न प्रपूजिता।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा ।।६।।
पीतपुष्पै पीतवस्त्रै पूजिता वेददायिनी।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला ब्रह्माविष्णवादिसेविता ।।७।।

पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद् भ्रुवो।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला वलिदा पीतवस्त्रधृक ॥८॥
अधरोष्ठौ तथा दन्तान जिह्वां च भुखंगा मम।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीताम्बर सुधारिणी ॥९॥
गले हस्ते तथा वाह्वोः युगपद् बुद्धिदा सताम्।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला दिव्यस्रगनुलेपना ॥१०॥
हृदये च स्तनौ नाभौ करावपि कृशोदरी।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगलापीतवस्त्र घनावृता ॥११॥
जघांया च तथा चोर्वोर्गुल्फयोश्चातिवेगिनी।
अनुक्तमपि यत स्थानं त्वकेशनखलोमकम् ॥१२॥
असृंग माँस तथाऽस्थिनी सन्ध्यश्चापि मे परा।
ताः सर्वा बगलादेवी रक्षेन्मे च मनोहरा ॥१३॥

॥ पञ्जरन्यास स्तोत्रम् ॥

बगलापूर्वतो रक्षेद आग्नेय्यां च गदाधरी।
पीताम्बरे दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैऋते ॥१॥
जिह्वां कीलयन्तो रक्षेद् पश्चिमे सर्वदा हि माम्॥
वयव्ये च मदोन्मत्ता कौवेर्यां च त्रिशूलिनी ॥२॥
ब्रह्मास्त्र देवता पातु ऐशान्यां सततं मम।
संरक्षेन मां तु सततं पाताले स्तब्ध मातृका ॥३॥
उर्ध्व रक्षेन महादेवि जिह्वां स्तम्भनकारिणी।
एवं दश दिशौ रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा ॥४॥
एवं न्यास विधिं कृत्वा यत् किंचित जपमाचरेत्।
तस्याः संस्मरणादेव शत्रुणां स्तम्भनं भवेत् ॥५॥

卐 卐 卐

इस पञ्जर न्यास स्त्रोत का पाठ जपादि से पूर्व करना चाहिये। इस स्तोत्र का पाठ करने से साधक पर साक्षात् भगवती पीताम्बरा का कवच बन जाता है, और उसके स्मरण मात्र से ही शत्रुओं की गति, बुद्धि और मुख स्तम्भित हो जाते हैं।

११ बगलामुखी कवच

साधकगण! यह कवच **"विश्वसारोद्धार"** तन्त्र, जोकिं एक दुर्लभ ग्रन्थ है, से उद्धृत किया गया है। पार्वती जी के द्वारा भगवान नागेश्वर से पूछे जाने पर भगवती बगला के कवच के विषय में प्रभु वर्णन करते हैं कि देवी बगला शत्रुओं के कुल के लिये जंगल में लगी अग्नि के समान हैं। वे साम्राज्य देने वाली और मुक्ति प्रदान करने वाली हैं।

भगवती बगलामुखी के इस कवच के विषय में बहुत कुछ कहा गया है। इस कवच के पाठ से अपुत्र को धीर, वीर और शतायुष पुत्र की प्राप्ति होती है और निर्धन को धन प्राप्त होता है। महानिशा में इस कवच का पाठ करने से सात दिन में ही असाध्य कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं। तीन रातों को पाठ करने से ही वशीकरण सिद्ध हो जाता है। मक्खन को इस कवच से अभिमन्त्रित करके यदि बन्ध्या स्त्री को खिलाया जाये, तो वह पुत्रवती हो जाती है। इसके पाठ व नित्यपूजन से मनुष्य बृहस्पति के समान हो जाता है, नारी समूह में साधक कामदेव के समान व शत्रुओं के लिये यम के समान हो जाता है। माँ बगला के प्रसाद से उसकी वाणी गद्य-पद्यमयी हो जाती है। उसके गले से कवितालहरी का प्रवाह होने लगता है। इस कवच का पुरश्चरण एक सौ ग्यारह पाठ करने से होता है, बिना पुरश्चरण के इसका उतना फल प्राप्त नहीं होता। इस कवच को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर पुरुष को दाहिने हाथ में व स्त्री को बायें हाथ में धारण करना चाहिये।

◆ ध्यान ◆

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनिम्,
हेमाभाङ्गरुचिं शशांङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युतां।
हस्तैर्मुदगरपाशवज्ररसनां संबिभ्रतीं भूषणै,
र्व्याप्तांगी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥

◆ विनियोग ◆

ॐ अस्य श्री बगलामुखी ब्रह्मास्त्र मन्त्र कवचस्य भैरव ऋषिः विराट् छन्दः श्री बगलामुखी देवता, क्लीं बीजं ऐं शक्ति श्रीं कीलकं, मम परस्य

च मनोऽभिलाषितेष्ट कार्य सिद्धये पाठः विनियोगः।

◆ ऋष्यादिन्यास ◆

शिरसि भैरव ऋषये नमः। मुखे विराट छन्द्से नमः। हृदिं बगलामुखी देवतायै नमः। गुह्यो क्लीं बीजाय नमः। पादयोः ऐं शक्तये नमः। सर्वाङ्गे श्रीं कीलकाय् नमः।

◆ करन्यास ◆

ॐ ह्रां अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

◆ हृदयादि न्यास ◆

ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय् हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय् फट्।

|| मन्त्रोद्धार ||

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्री बगलानने! मम रिपुन् नाशय-नाशय ममैश्वर्याणि देहि-देहि, शीघ्रं मनोवांछित कार्यं साधय-साधय ह्रीं स्वाहा।

(इस मन्त्र की एक माला जपकर फिर कवच पाठ करें।)

|| कवच ||

शिरो मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम्।
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्री बगलानने! ॥१॥
श्रुतौ मम् रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम्।
पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्त्यं तु मस्तकम् ॥२॥
देहि द्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम्।
कण्ठदेशं मनः पातु वान्छित बाहुमूलकम् ॥३॥
कार्यं साधय द्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम।
माया युक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ॥४॥
अष्टाधिक चत्वारिंशद् दण्डाढ्या बगलामुखी।
रक्षा करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ॥५॥
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वाङ्गे सर्व सन्धिषु।
मन्त्रराज सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ॥६॥
ॐ ह्रीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु।
मुखी वर्णद्वयं पातु लिङ्गं मे मुष्कयुग्मकम् ॥७॥

जानुनि सर्वदुष्टानां पातु में वर्ण पञ्चकम्।
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णा परमेश्वरी ॥८॥
जङ्घा-युग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी।
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम ॥९॥
जिह्वां वर्ण द्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च।
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धि पादतले मम् ॥१०॥
विनाशय पदं पातु पादाङ्गुल्योर्नखानि मे।
ह्रीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धि-इन्द्रिय वचांसि मे ॥११॥
सर्वाङ्गं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु।
ब्राह्मीं पूर्वदले पातु चाऽग्नेयां विष्णुवल्लभा ॥१२॥
माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चाऽपराजिता ॥१३॥
वाराही चौत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु।
उर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ॥१४॥
इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च स-वाहनाः।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ॥१५॥
श्मशाने जल मध्ये च भैरवाश्च सदाऽवतु।
द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरण भूषिताः ॥१६॥
योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम।

卐 卐 卐

बगला प्रत्यंगिरा कवच

◆ **विनियोग** ◆

"अस्य श्री बगला प्रत्यंगिरा मन्त्रस्य नारद ऋषिस्त्रिष्टुप छन्दः प्रत्यंगिरा देवता ह्लीं बीजं हूं शक्तिः ह्रीं कीलकं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रत्यंगिरा मम शत्रु विनाशे विनियोगः।"

◆ **मन्त्र** ◆

"ॐ प्रत्यंगिरायै नमः प्रत्यंगिरे सकल कामान् साधय मम रक्षां कुरु कुरु सर्वान् शत्रुन् खादय-खादय, मारय-मारय, घातय-घातय ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।"

ॐ भ्रामरी स्तम्भिनी देवी क्षोभिणी मोहिनी तथा।
संहारिणी द्राविणी च जृम्भणी रौद्ररूपिणी।।
इत्यष्टौ शक्तयो देवि शत्रु पक्षे नियोजताः।
धारयेत् कण्ठदेशे च सर्व शत्रु विनाशिनी।।

ॐ ह्रीं भ्रामरी सर्व शत्रून् भ्रामय भ्रामय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं स्तम्भिनी मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं क्षोभिणी मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं मोहिनी मम शत्रून्मोहय मोहय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं सहांरिणी मम शत्रून् संहारय संहारय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं द्राविणी मम शत्रून् द्रावय द्रावय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं जृम्भिणी मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय ॐ ह्रीं स्वाहा।
ॐ ह्रीं रौद्रि मम शत्रून् सन्तापय सन्तापय ॐ ह्रीं स्वाहा।

卐 卐 卐

विशेष

इस कवच के पाठ से वायु भी स्थिर हो जाती है। शत्रु का विलय हो जाता है। विद्वेषण, आकर्षण, उच्चाटन, मारण तथा शत्रु का स्तम्भन भी इस कवच के पढ़ने से होता है। बगला प्रत्यंगिरा सर्व दुष्टों का नाश करने वाली, सभी दुःखों को हरने वाली, पापों का नाश करने वाली, सभी शरणागतों का हित करने वाली, भोग, मोक्ष, राज्य और सौभाग्य प्रदायिनी तथा नवग्रहों के दोषों का दूर करने वाली हैं। जो साधक इस कवच का पाठ तीनों समय अथवा एक समय भी स्थिर मन से करता है, उसके लिए यह कल्पवृक्ष के समान है, और तीनों लोकों में उसके लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है। साधक जिसकी ओर भरपूर दृष्टि से देख ले, अथवा हाथ से किसी को छू भर दे, वही मनुष्य दासतुल्य हो जाता है।

(इति श्री रुद्रयामले शिवपार्वति सम्वादे बगला प्रत्यंगिरा कवचम्)

२५

बगलामुखी चालीसा

॥ दोहा ॥

भक्तन पर किरपा करो, दुष्टन को दो त्रास।
माता श्री बगलामुखी, करो हृदय में वास ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय माँ, आद्य भवानी।
सारे जग की, तुम महारानी ॥१॥
पीत वसन, पीताम्बर सोहै।
शशी ललाट, मुख मण्डल मोहै॥२॥
कानन कुण्डल, सिर मुकुट बिराजै।
यही रुप, शत्रुन को छाजै ॥३॥
हाथ पाश, गल मुतियन माला।
तीनों नेत्र अति विकराला॥४॥
कर में तोरे मुद्गर साजै।
बुरि ठौर शत्रुन् पर बाजै ॥५॥
रत्न जड़ित स्वर्ण सिहांसन थारी।
ताकी शोभा, है अति प्यारी ॥६॥
अरि की जिह्वा खींच तुम लाई।
रूप देख सृष्टि थर्राई ॥७॥
पीतासन, तुमरो सिहांसन।
सारे साधक करते वन्दन ॥८॥

भोग मोक्ष की तुम हो दाता।
एहि विधि कारण नाम विख्याता ॥९॥
हाथ जोड़ूं तोहे शीश नवांऊ।
तोरि कृपा की करदो छांऊ ॥१०॥
तुमरे मन्त्र की महिमा न्यारी।
मोहे सकल जग, रिपु और नारी ॥११॥
जो साधक तुमको नित ध्यावै।
अष्ट सिद्धि वह वर में पावै ॥१२॥
हाथ जोड़ जो करै आरती।
वह पावै नाना विधि सम्पत्ति ॥१३॥
राज कोप की तुमहो त्राता।
स्तम्भन तोरा जग विख्याता ॥१४॥
मात ! दया तोरी है जग जानि।
करहु कृपा मो पर महारानी ॥१५॥
जो मन में तोरि छवि ध्यावै।
वाको देख जगत थर्रावै ॥१६॥
गहरे पैंठि जिन साधक ध्यावो।
कबहु न भेद तिहारो पायो ॥१७॥
त्रिविध ताप की तुम हो हर्ता।
षट्कर्मों की साधन कर्ता ॥१८॥
पीत आभूषण, पीतहि चन्दन।
समग्र देव तोरा करते वन्दन ॥१९॥
गुरु "रामस्वरुप" की आज्ञा पाऊं।
मात ! भवानी ! तेरा गुण गाऊं ॥२०॥
एक लाख जाप करे जो कोई।
ताके सिद्धि शरणागत होई ॥२१॥
पूजनान्त में होम करावै।
ताहि से, सकल जगत बोरावै ॥२२॥
अशोक फूल से होम जो करई।
निश्चय घर सम्पत्ति भर जेई ॥२३॥
दीप-दान जो करै एक मासा।
ताके होत दुखहि सब नाशा ॥२४॥
आकर्षण की महिमा न्यारी।
मधु, घी, शक्कर, नून संग वारी ॥२५॥
जो साधक अरि-उच्चाटन चहावै।

हरिद्रा, नमक संग हरिताल मिलावै ॥२६॥
सात रात जो जापै नामा।
ताहि के पूर्ण होत सब कामा ॥२७॥
शाकल से दशांश करै जो कोई।
ताके घर सुख सम्पत्ति सब होई॥२८॥
गुग्गुल, घी संग होम करावै।
नृप ताहि के वश में हो जावै ॥२९॥
अष्ट सिद्धि नव निधि की दाता।
करहु कृपा तुम सब पर माता ॥३०॥
छोटा सा मैं दास तिहारा।
मैया मोहे देऊ सहारा ॥३१॥
घी, दूध, मधु, शक्कर घर लावै।
तेहि पे तीन सौ जाप करावै ॥३२॥
जिसको विष का संकट व्यापा।
ये ही दूध हरै सब तापा ॥३३॥
जो भीर में तुम्हें धियावैं।
निश्चय ही सकंट कट जावै ॥३४॥
तेल संग निम्बपत्र मिलावै।
एक लाख जप, होम करावै ॥३५॥
जप कर, दशांश करै जो भाई।
ते शत्रु खुद ही लड़ जाई ॥३६॥
तुम्हें ध्यान जो निशि दिन लावै।
कोई कष्ट ना उसे नसावै ॥३७॥
तुमरो भजन जो मानस गावै।
ताहि के सकल बन्ध कट जावैं ॥३८॥
कहां तक महिमा कहूं तुम्हारी।
महारानी अति मंगलकारी ॥३९॥
पाठ करे जो दिन चालीसा।
दे दर्शन तेहि को गौरीशा ॥४०॥

॥ दोहा ॥

मातः ! कृपा मोहि पै करो, जोड़ कहूं दो हाथ।
भक्त योगेश्वरानन्द की, सदा राखियो लाज॥

卐 卐 卐

"महाविद्या" श्री बगलामुखी साधना और सिद्धि
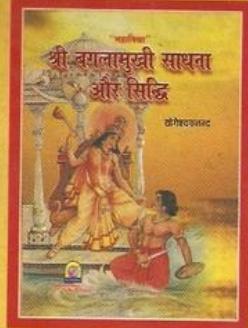
पुस्तक के विषय में

बगलामुखी साधना और सिद्धि– श्री वृद्धि, अचल सम्पत्ति प्राप्ति, बर्बरतम शत्रुओं और घोर विपत्तियों से त्राण पाने के लिए श्री बगलामुखी की साधना सम्पन्न की जाती है। वाद-विवाद, मुकदमों में विजय प्राप्ति एवं शत्रुओं को समूल नष्ट करने में इनका स्थान सर्वोच्च है। बगलामुखी साधक के समक्ष प्रबलतम शत्रु भी विनत होकर दीन-हीन हो जाते हैं। ये ही महामाया शक्ति हैं जिन्हें "परम ब्रह्मास्त्र विद्या" कहा जाता है। प्रस्तुत पुस्तक में वह सम्पूर्ण सामग्री उपलब्ध है, जो इस परम शक्ति-साधना के लिए नितान्त आवश्यक है।

लेखक के विषय में

अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त अपनी आध्यात्मिक प्रवृति एवं मन्त्र-तन्त्र जैसे गूढ़ विषयों में रुचि होने के कारण श्री योगेश्वरान्द (गुरु प्रदत्त नाम) उच्च कोटि के साधक पण्डित गजेन्द्र प्रसाद जी के सानिध्य में आये और उनसे आध्यात्मिक दीक्षा ग्रहण की। वहीं उनका परिचय स्वामी आदित्य जी से हुआ, जिनकी साधना स्थली पौड़ी में थी। अतः ज्ञान पिपाशु श्री योगेश्वरानन्द भी उनके साथ पौड़ी चले गये और उनसे साधना सम्बन्धी गूढ़ एवं विस्तृत ज्ञान प्राप्त किया।

तद्पोरान्त आप श्री निश्चलानन्द अघोरी के सम्पर्क में आये और उनके सानिध्य में कई साधनाएं सम्पन्न की। परन्तु आपकी यात्रा को विराम नहीं मिला अतः "माँ पीताम्बरा" और "श्रीविद्या" के अद्वितीय उपासक ब्रह्मचारी श्री रामस्वरुप जी के सानिध्य में आये और आज भी आप उन्हीं से जुड़े हुए हैं।

श्री योगेश्वरानन्द जी की धारणा है कि समाज से दूर साधना में रत रहना केवल स्वार्थ है। सच्चा साधक वही है, जो समाज में रहते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन करने के साथ-साथ मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त करे। परिणामस्वरुप वर्ष 1985 से आप न्याय विभाग में सेवारत रहते हुए भी निरन्तर साधनारत हैं, जो आपकी धारणा का पुष्ट प्रमाण है।

यद्यपि इस सम्प्रति काल में भारतीय मनीषियों की महान देन जो आध्यात्मिक साधना और उससे मानवता को प्राप्त होने वाले लाभ के सम्बन्ध में है, अतुलनीय है। परन्तु समाज में फैले हुए आडम्बर, धोका-धड़ी एवं निज स्वार्थ-साधना में रत कतिपय स्वयंभु गुरु इसे प्रदूषित कर रहे हैं। अतः लेखक ने इनसे विक्षुब्ध होकर परम गूढ़ एवं गोपनीय साधनाओं, उनके वास्तविक स्वरूप एवं लाभ को जन-सामान्य तक पहुंचाने का सबल एवं सरल प्रयास "मन्त्र-साधना", "यन्त्र-साधना", "बगलामुखी-साधना एवं सिद्धि", तथा "षोडशी-महाविद्या" जैसी अद्वितीय श्रृंखलाबद्ध कृतियों के माध्यम से किया है।

हमें आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास है कि सुधी पाठक एवं साधक इन कृतियों के माध्यम से अवश्य ही लाभान्वित होगें।

मूल्यः रु० 115.00

डायनेमिक पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लि०
• न्यूयॉर्क • लन्दन • दिल्ली • सिंगापुर • मैलबोर्न

Author of This Book.

Name – Shri Yogeshwaranand
Contact no. 09917325788

Main precautions to do baglamukhi sadhna
1.first prepare yourself to do sadhna. It means to do hard work.
2. select a mature Guru and get Diksha.
3. there are two methods of this pious sadhna, first- Dhakshin marg and second Vama marg. In these both margs Dakshin marg is understood better because of Vedic method, but it is also said that in Kaliyuga Vama marg is better because of early achievements. Hence firstly decide the Marg to which you are going to accept.
4. After getting Dhiksha start your Mantra-Japa according to the directions of your Guru.
5. For any Baglamukhi- sadhak it is necessary to use yellow garments, yellow Aasan,yellow(Haldi)rosary, yellow chandan(sandal),and yellow Bhog(dishes) in the worship of Bhagwati Pitambara.
6. To get Siddhi(kripa of Bhagwati) every one should try to go near Bhagwati by Her worship, Hawan & Mantra- Japa, it means Adwet Bhava. (Adwet Bhava stands for that there is no difference between you and your Devta).
7.Every Sadhak (Priest or worshipper) should never tease to any Jeeva---any animal, any bird or any human. He should never try to do such any work by which anybody hurts or his soul hurts.
8. Bhagwati Bagla is Vashnavi Shakti, so She is understood the Palanhara of the world. Every girl, lady is a part of This Mahashakti, so never tease or harash women.A sadhak should always respect them like Bhagwati.

Above all directions are used in both Marga(ways) of Sadhna.These both margs are the ways who carry a Sahak to his last Lakshya(aim)---Moksha.

But some Sadhak use this Mahavidhya in Kamya-Karm. To do these Karmas one should use accurate methods, which are told by his Gurudev. In these Kamya Karmas this Mahavidhya is used to kill anybody, atract any body,to make mad like any body , or such like these things. This Mahavidya is mainly used for Stambhan,Ucchatan,Vashikaran etc. To get victory in elections & suits this Mahavidhya is highly effected.The enemies of a Bagla-Sadhak can not stand before him. They are destroyed like a mosquito. Any Kritya-Prayoga can not stand

before this Mahavidhya. This Mahavidhya is also said Pervidhya-Grasani. It means any Prayog madeby your enemy or done by any other Tantrik can never effect any Bagla-Sadhak.

This Mahavidhya is used in various ways. But one should not use it above mentioned methods. You may protect yourself ,but never harm to any one by using the power of This greatest Mahavidhya. But by any reason if a Sadhak becomes compell to use these methods, he should learn them by his Gurudev.

Baglamukhi sadhna is one of the great achievement in life because when you start doing baglamukhi sadhna it is the symbol that you are on the right path of the life that is self knowledge or moksha. Hurdles in the path of moksha are kama, krodha, lobha , moha & ahankar. These are our internal enemies which can not be killed physically. When you start baglamukhi sadhna with no desire of fruit than you will feel that you are becoming more energetic & you are getting control on your thoughts because thoughts are first reason to do the good things or bad things. You will become what you think. And when you have control over it you can become what you want & you will achieve every goal in life.